Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

हिंदी साहित्य की शिक्षण प्रणाली में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अवसर

प्रा.डॉ. पी .एम.भुमरे*
सहयोगी प्राध्यापक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष ,
श्री मधुकरराव बापूराव पाटील खतगांवकर महाविद्यालय,
शंकरनगर ,तह- बिलोली, जि.- नांदेड

शोध सार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वह तकनीक है जिसमें मशीनों को मानव जैसी सोचने, समझने, विश्लेषण करने और निर्णय लेने की क्षमता दी जाती है। कंप्यूटर,मोबाइल एप्स, डिजिटल प्लेटफॉर्म और शैक्षणिक सॉफ्टवेयर इसके प्रमुख उदाहरण है। समय बदलाव के साथ-साथ आधुनिक युग में शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। तकनीकी विकास ने शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को अधिक सरल ,रोचक और प्रभावी बनाया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता इसी परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हिंदी साहित्य की शिक्षण प्रणाली में कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनेक नए अवसर प्रदान कर रही है जिससे शिक्षक की गुणवत्ता और पहुंच दोनों में वृद्धि हो रही है।आज के समय में AI शिक्षा, चिकित्सा , उद्योग और दैनिक जीवन के अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

बीज शब्द: *सूचना प्रौद्योगिकी,कृत्रिम बुद्धिमत्ता,व्यक्तिगत अधिगम,आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस,हिंदी साहित्य की शिक्षण प्रणाली ।*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
प्रा.डॉ. पी .एम.भुमरे
Email: bhumare1984@gmail.com

प्रस्तावना :

वर्तमान युग विज्ञान और तकनीकी का युग है । सूचना प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने शिक्षा के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन किए है। इन्हीं परिवर्तनों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है । हिंदी साहित्य की शिक्षण प्रणाली भी इससे अछूती नहीं रही है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से हिंदी साहित्य का अध्ययन अधिक रोचक, सरल और प्रभावी बनता जा रहा है । हिंदी साहित्य शिक्षण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका- कृत्रिम बुद्धिमत्ता जिसे अंग्रेजी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कहा जाता है । ऐसी तकनीक है जिसके द्वारा मशीनों और कंप्यूटरों को मानव जैसी सोचने, समझने, सीखने और निर्णय लेने की क्षमता दी जाती है। सरल शब्दों में AI मशीनों को बुद्धिमान बनने की प्रक्रिया है ताकि वे बिना बार-बार निर्देश दिए गए कार्य कर सके। इस प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक आधुनिक तकनीक है जो मशीनों को सोचने - समझने की क्षमता प्रदान करती है आज के समय में AI शिक्षा, चिकित्सा , उद्योग और दैनिक जीवन के अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।हिंदी साहित्य के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनेक स्तरों पर सहायक सिद्ध हो रही है । डिजिटल पाठ्यपुस्तक के ऑडियो वीडियो व्याख्यान, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और स्मार्ट क्लासरूम के माध्यम से छात्र कविता, कहानी ,नाटक और निबंध को आसानी से समझ पा रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित टूल्स छात्रों को कवियों और लेखकों की रचनाओं का भावार्थ, शब्दार्थ और संदर्भ समझाने में मदद करते हैं ।इससे कठिन साहित्य के विषय भी सरल हो जाते हैं।कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी साहित्य के शिक्षण अधिगम को अधिक रोचक, व्यक्तिगत और प्रभावी बना सकती है। इसके प्रमुख अवसर निम्नलिखित है।

व्यक्तिगत अधिगम -

व्यक्तिगत अधिगम वह शिक्षण पद्धति है। जिसमें हर विद्यार्थी को उसकी क्षमता, रुचि, आवश्यकता और सीखने की गति के अनुसार शिक्षा दी जाती है। इसमें सभी छात्रों को एक सी विधि से पढ़ने के बजाय प्रत्येक छात्र के लिए सीखने का तरीका अलग-अलग होता है। जिस प्रकार हर व्यक्ति अलग होता है उसी प्रकार उसकी सीखने की शैली भी अलग होती है। व्यक्तिगत अधिगम इसी विचार पर आधारित है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रत्येक छात्र की क्षमता, रुचि और गति को ध्यान में रखकर अध्ययन सामग्री प्रदान करती है । कमजोर छात्रों को अतिरिक्त अभ्यास और सरल सामग्री मिलती है । जबकि प्रतिभाशाली छात्रों को उन्नत अध्ययन का अवसर मिलता है। इससे शिक्षण अधिक व्यक्तिगत और प्रभावी बनता है। व्यक्तिगत अधिगम की मुख्य विशेषताओं के रूप में इसमें छात्र केंद्रित शिक्षा का ध्यान रखा जाता है। पढ़ाई का केंद्र शिक्षक नहीं होता बल्कि पढ़ाई का उद्देश्य सिर्फ छात्र होता है। छात्रों को ध्यान में रखकर ही व्यक्तिगत अधिगम का मॉडल्स तैयार किया जाते है। साथ ही छात्रों को जल्दी सीखाने की कोई समय सीमा तय नहीं होती। उन्हें आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया जाता है और जिन छात्रों को कठिनाई होती है उन्हें अधिक से अधिक समय और अभ्यास करने के लिए पर्याप्त स्वाध्याय दिया जाता है। कक्षा में कई सारे विद्यार्थियों की रुचि एक समान नहीं होती बल्कि उम्र, बौद्धिक स्तर और परिस्थितियाँ हर एक छात्र की भिन्न-भिन्न होती है। छात्र अपनी रुचि के अनुसार विषय को प्राधान्यक्रम देते है । छात्रों को स्वातंत्र्य होता है की, अपने पसंद के विषय को चुनना अर्थात छात्रों की रुचि को इसमें महत्व दिया जाता है। जिस कारण से छात्र पढ़ाई की तरफ अधिक ध्यान देते हैं। शिक्षा प्राप्त करने के बाद हर एक छात्रा का मूल्यमापन करके, उनसे फीडबैक प्राप्त किया जाता है । इस कारण छात्र की प्रगति के अनुसार अलग-अलग सुझाव और मार्गदर्शन मिलता है। यह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस छात्रों के उत्तर , अभ्यास और प्रदर्शन का विश्लेषण करता है। साथ ही उनकी कमजोरी को पहचान कर उसके अनुसार अध्ययन सामग्री और अभ्यास के लिए दिशा निर्देश भी देता है। उदा.यदि कोई छात्र हिंदी साहित्य में कविता समझने में कमजोर है तो एआय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उसे सरल कविताएं, इसका भावार्थ और अतिरिक्त अभ्यास प्रदान करने में सहायता करता है।व्यक्तिगत अधिगम शिक्षण को अधिक प्रभावी, रुचिकर और उपयोगी बनता है। यह प्रत्येक विद्यार्थियों को उसकी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर देता है और सीखने की प्रक्रिया को सार्थक बनता है।

भाषा दक्षता का विकास -

भाषा दक्षता का विकास वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति किसी भाषा को सही स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से समझने और प्रयोग करने की क्षमता प्राप्त करता है। इसमें भाषा के चारों प्रमुख कौशलों का विकास शामिल होता है। भाषिक कौशल्य के अंतर्गत श्रवण, वाचन, पठन, बोलना और लेखन इस प्रकार के चार कौशलों का समावेश होता है। बोले गए शब्दों और भावों को ध्यानपूर्वक समझने की क्षमता यह श्रवण कौशल के अंतर्गत आती है। ध्यानपूर्वक जो सुना जाता है, उससे श्रवण की क्षमता विकसित होती है और मस्तिष्क में शब्दों का संग्रह बढ़ जाने से लेखन के लिए प्रेरणा मिलती है। यह AI टेक्स्ट टू स्पीच तकनीकी के माध्यम से लिखित पाठ को स्वरित रूप में सुनने की सुविधा देता है। इससे छात्र सही उच्चारण और लय के साथ भाषा सीखते हैं। यह दृष्टि बाधित छात्रों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है । इसके अलावा यह AI स्पीच टू टेक्स्ट तकनीक के जरिए छात्र अपने बोले गए शब्दों को लिखित रूप में देख सकते हैं । जिससे उनकी भाषा और अभिव्यक्ति की क्षमता में सुधार होता है ।लिखित भाषा को सही ढंग से पढ़ना और उसका अर्थ समझना भी एक कला होती है। किस शब्दों को कहां पर किस ढंग में उच्चारण करना है । साथ ही उसके संकेत को समझना है ,यह कला इससे अधिक विकसित होती है। वाचन और पठन कौशल्य इस प्रकार का है कि, सही वाचन या पठन करने की जरूरत होती है

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

,अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाता है। यह छात्रों को लिखित पाठ को पढ़ने में मदद करता है। यह केवल शब्दों को दिखाने तक सीमित नहीं है बल्कि कठिन शब्दों,मुहावरों और साहित्यिक अभिव्यक्तियों के अर्थ को सरल भाषा में समझता है।श्री बालेंदु शर्मा दधीच लिखते हैं, "कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी के स्थाई भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है। यूनेस्को ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि,दुनिया की 7200 भाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जाएगी। अगर हम हिंदी को विलुप्त होने वाली इन भाषाओं की सूची में नहीं देखना चाहते तो हमें कृत्रिम मेधा को खुले दिल से अपनाना चाहिए "। 1 एआय के माध्यम से छात्र अपनी गति और स्तर के अनुसार पाठ पढ़ सकते हैं साथ ही यह पाठ का सारांश और मुख्य बिंदु भी प्रस्तुत करता है। जिस पाठ की समझ और स्मरण शक्ति बढ़ती है ।सामने वाले को अथवा श्रोताओं को जो संदेश देना है , उसके लिए बोलने की जरूरत होती है। यह वाचन या बोलना इसमें स्पष्ट, शुद्धता और आत्मविश्वास के साथ किया गया संभाषण इससे वैचारिक स्पष्टता आती है। साथ ही श्रोताओं को सही संदेश प्राप्त होता है। बोलते समय इस बात का ध्यान रखना अनिवार्य होता है कि, वक्ता के विचारों को स्पष्ट और आत्मविश्वास से तर्कों को प्रस्तुत करें। साहित्य की किसी भी विधा में लेखन करते समय व्याकरणिक शुद्धता पर अधिक ध्यान देना आवश्यक होता है । सबसे अधिक दोष व्याकरणिक होते है। व्याकरणिक रूप से सही और भावपूर्ण लेखन करने की क्षमता भाषा दक्षता का प्रमुख अंग है। रचनाकार ने इस पर अधिक ध्यान दिया तो भाषिक कौशल्य का विकास होता है। भाषा दक्षता के अंतर्गत शब्दावली का विस्तार, व्याकरण की शुद्धता,वाक्य संरचना और उच्चारण और अभिव्यक्ति पर अधिक ध्यान देना और इन तत्वों का पालन करना बहुत जरूरी होता है। उदाहरण के लिए जब कोई छात्र हिंदी में सही शब्दों का प्रयोग करते हुए स्पष्ट बोल पाता है,साहित्यिक पाठ को समझ पाता है और शुद्ध निबंध या उत्तर लिख पाता है । इसका निरीक्षण करना और निश्चित रूप से सुझाव देना अत्यावश्यक होता है।

बहुभाषी सुविधा -

AI पठन और श्रवण के दौरान बहुभाषी सहायता भी प्रदान करती है। अन्य भाषिक लोगों के लिए उनकी समस्याओं का निदान भी करता है । कठिन शब्दों और अनुच्छेदों को छात्र की मातृभाषा या अन्य समझने योग्य भाषा में अनुवाद करके समझने हेतू आसान बनाता है। इससे भाषा की बाधा कम होती है और सीखने की प्रक्रिया सहज होती है।साहित्यिक पाठों की व्याख्या- आधुनिक युग में तकनीकी ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से साहित्यिक पाठों की व्याख्या करना सरल हो गया है जिससे साहित्यकारों को सरल, स्पष्ट और प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण सहायता हुई है । पाठ को समझने की प्रक्रिया यह AI सरल बनाता है जिसमें AI सबसे पहले साहित्यिक पाठ को पढता है और उसका भाषिक विश्लेषण करता है। वह शब्दों, वाक्य और अनुच्छेदों को अलग-अलग करके उनके अर्थ और आपसी संबंधों को समझने का प्रयास करता है । इससे AI को रचना की मूल संरचना और विषय को पहचानने में सहायता मिलती है। रचनाओं में शब्दार्थ और भावार्थ के कठिन कई ऐसे स्थान होते हैं जहां पर साहित्यिक पाठों में कठिन और गुढ शब्द होते हैं। AI ऐसे शब्दों के सरल अर्थ प्रस्तुत करता है और पंक्तियां या अनुच्छेदों का भावार्थ स्पष्ट करता है। इससे छात्रों को कविता, कहानी या नाटक का मूल भाव समझने में आसानी होती है। साहित्य की कई रचनाओं में अनेक स्रोतों से संदर्भ और प्रसंग लिए जाते हैं ।उनकी यथार्थवादी और सही पहचान करने के लिए AI मदद करता है। रचनाओं में सामाजिक, ऐतिहासिक और भावनात्मक संदर्भों को समझने का प्रयास करता है। यह बताता है कि, लेखक या कवि ने रचना किस परिस्थिति में लिखी और उसका उद्देश्य क्या है। इससे पाठ की गहन समझ विकसित होती है। साहित्य की रचना करते समय साहित्य के अनेक तत्वों का आधार लिया जाता है ।जिसमें रस,अलंकार, छंद, प्रतीक और बिंब आदि का प्रसंगानुरूप पहचान

करना आवश्यक होता है ।उन्हें उदाहरण के साथ समझकर छात्रों को साहित्यिक सौंदर्य से परिचित कराने के लिए AI सहायता यह करता है। नाटक हो या काव्य उसमें कई प्रकार के पात्र होते हैं। रचनाकार इन पात्रों की पार्श्वभूमि, स्थिति और उनकी मनोवृति को विभिन्न आयामों में प्रस्तुत करते हैं। कहानी हो या नाटक में AI पात्रों के स्वभाव और उनके आपसी संबंध और घटनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करता है। इससे कथानक और पात्र चित्रण को समझना सरल हो जाता है। कई बार नाटक तथा कहानी के पात्रों में आंतरिक जटिलता होती है। इन जटिल भावों को पकड़ना मुश्किल हो जाता है ऐसे में AI सहायता करता है। हिंदी साहित्य की शिक्षण प्रणाली में कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षकों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात AI शिक्षकों की भूमिका को अधिक प्रभावी और सृजनात्मक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। हिंदी साहित्य की शिक्षण प्रणाली में कृत्रिम बुद्धिमत्ता AI शिक्षकों के लिए निम्न प्रकार से उपयोगी सिद्ध हो रही है। पाठ पढ़ाने के पहले पाठ योजना तैयार करनी पड़ती है। यह एक जटिल कार्य होता है। पाठ योजना तैयार करने में सहायक कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सबसे बड़ी विशेषता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से हिंदी शिक्षकों को साहित्य के पाठों के लिए सुव्यवस्थित और रोचक पाठ योजनाएं बनाने के लिए सहायता करता है। कविता, कहानी ,नाटक और निबंध के लिए उद्देश्य, गतिविधियों और मूल्यांकन के तरीके सरलता से तैयार किया जा सकते हैं। हिंदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपयोग से शिक्षण सामग्री का विकास हो रहा है। एआय आधारित टूल्स से शिक्षक सरल भाषा में नोट्स, सारांश, प्रश्नोत्तरी और अभ्यास सामग्री तैयार कर सकते हैं। कठिन साहित्यिक रचनाओं के भावार्थ, शब्दार्थ और संदर्भ को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करना आसान हो जाता है। छात्रों की परीक्षा होने के बाद छात्रों का मूल्यांकन करने और परीक्षा के कठिन और जटिल, कामकाज में सुविधा हेतु एआय महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से प्रश्नपत्र का निर्माण, वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का मूल्यांकन और छात्रों की प्रगति का विश्लेषण किया जाता है। इससे शिक्षकों का समय बचता है और मूल्यांकन निष्पक्ष और सटीक होता है। कक्षा में छात्रों की प्रगति का ग्राफ- ऊपर नीचे होता रहता है ।साथ ही कक्षा के छात्रों का प्रदर्शन का डाटा एकत्र कर उनकी कमजोरी और क्षमताओं की पहचान कराता है। इससे शिक्षक प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान दे सकता है और उन्हें उपयुक्त मार्गदर्शन भी प्रदान कर सकता है। आज के जमाने में केवल सुझाव देने के लिए ही नहीं है बल्कि रचनात्मक और संवादात्मक शिक्षण देने के लिए भी प्रयोग उपयोगी है । स्मार्ट क्लासरूम, डिजिटल प्रस्तुति और मल्टीमीडिया संसाधनों के माध्यम से शिक्षक हिंदी साहित्य को अधिक रोचक बना रहे हैं। इससे कक्षा में छात्रों की रुचि और सहभागिता बढ़ती है। स्नातक शिक्षा के बाद छात्रों और शिक्षकों को कई सारे शोध , संशोधनों में एआय सहायता कर रहा है। हिंदी साहित्य के शिक्षकों के लिए एआय शोध कार्य में भी उपयोगी है। यह विभिन्न लेखकों, कृतियां और आलोचनाओं से संबंधित सामग्री खोजने और विश्लेषण करने में सहायता करता है अर्थात हिंदी साहित्य की शिक्षण प्रणाली में कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षकों के लिए एक सहायक साधन है। यह शिक्षकों के कार्य को सरल बनाकर उन्हें अधिक समय, रचनात्मक शिक्षण और साहित्यिक विमर्श के लिए प्रदान करती है। एआय के सटीक प्रयोग से हिंदी साहित्य शिक्षक को अधिक प्रभावी और आधुनिक बना सकते हैं। हिंदी साहित्य की शिक्षण प्रणाली में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अनुसंधान और संरक्षण के क्षेत्रों में कई सारे अवसर उपलब्ध हुए है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हिंदी साहित्य की शिक्षण प्रणाली में केवल अध्यापन ही नहीं है बल्कि अनुसंधान और संरक्षण के क्षेत्र में भी नए अवसर प्रदान किए हैं। यह तकनीक हिंदी साहित्य की समृद्ध विरासत को सुरक्षित रखने और उस पर गहन अध्ययन करने में अत्यंत सहायक सिद्ध हो रही है ।जैसे हम देखते हैं कि, कई सारे प्राचीन दुर्लभ साहित्यिक ग्रंथों का धीरे-धीरे लुप्त हो जाना, कालानुरूप उनके अवशेष लुप्त हो गए हैं। ऐसे ग्रथों का समय पर ही हम

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

डिजिटलीकरण करेंगे तो ग्रंथालय और ग्रंथ का संवर्धन होगा। हिंदी के साहित्यिक पांडुलिपियों और पत्रिकाओं का डिजीटलीकरण संभव हुआ है। इससे प्राचीन ग्रंथ सुरक्षित रहते हैं और शोधार्थियों व छात्रों को आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। हिंदी में पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण आसान हो जाएगा। वाचिक ज्ञान को डिजिटल स्वरूपों में सहेजा जा सकेगा। हिंदी भाषी लोग वैश्विक संस्थानों में पढ़ सकेंगे, भाषाओं की सीमाओं से मुक्त रहते हुए कौशल प्राप्त कर सकेंगे और विश्व को अपनी सेवाएं दे सकेंगे। हिंदी बोलने वाला व्यक्ति प्रौद्योगिकी के प्रयोग से अंग्रेजी,जापानी, चीनी, स्पैनिश फ्रेंच या अन्य भाषा- भाषी लोगों को कंटेंट और सेवाएं उपलब्ध करा सकेगा, बिना उन भाषाओं की जानकारी रखें।"2 एआय ने साहित्यिक शोध में कई सारी सरलता उपलब्ध कराई है। शोधकर्ताओं को बड़ी मात्रा में साहित्यिक सामग्री इकट्ठा करने के लिए कई सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। साहित्यिक सामग्री का विश्लेषण करना पड़ता था। लेखक काल, प्रवृत्ति और विषय के आधार पर समग्र की खोज और तुलना सरल हो जाती है।जिससे अनुसंधान अधिक सटीक और समयबद्ध बनता है। संशोधन के क्षेत्र में समय और भौतिक क्षेत्र की बहुत बड़ी मर्यादा संशोधक को होती है। कई देशों की यात्राएं भी साहित्यकारों को करनी पड़ती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अर्थात एआय आधारित कई सारे वैश्विक ग्रंथ का अनुवाद हिंदी साहित्य की भाषा में उपलब्ध कराता है। इससे हिंदी साहित्य का दायरा बढ़ाने में सहायता होती है। कई सारे हिंदी साहित्य के प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई भाषाओं में एआय के माध्यम से संभव हुआ है। इस कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी साहित्य तथा भाषा के क्षेत्र में शोध के नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता नई पीढ़ी के शोधकर्ताओं को डाटा आधारित शोध की और प्रेरित करती है। इसे हिंदी साहित्य के अध्ययन में नए दृष्टिकोण और नवीन शोध पद्धतियों का विकास होता है।

निष्कर्ष -

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नई शताब्दी की नई खोज एक देन है। जिससे हिंदी साहित्य की शिक्षण प्रणाली में शिक्षकों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है। यह शिक्षकों के कार्य को सरल बनाकर उन्हें अधिक समय रचनात्मक शिक्षण और साहित्यिक विमर्श प्रदान करती है। हिंदी साहित्य की शिक्षण प्रणाली में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ,अनुसंधान और संरक्षण के क्षेत्र में अपार अवसर प्रदान कर रही है। यह न केवल साहित्य को सुरक्षित रखती है बल्कि उसके गहन अध्ययन और वैश्विक पहचान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एआय संतुलित और विवेकपूर्ण उपयोग से हिंदी साहित्य को भविष्य के लिए और अधिक समृद्ध बना सकती है। हिंदी साहित्य की शिक्षण प्रणाली में कृत्रिम बुद्धिमत्ता अधिक रोचक और व्यक्तिगत साथ ही प्रभावी बना रही है। जिसके कारण व्यक्तिगत अधिगम शिक्षण को प्रभावी और रुचिकर बनाने में सहायता हो रही है । छात्रों की रुचि स्तर और गति के अनुसार पाठ्य सामग्री का अनुकूलन करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है साथ ही भाषा दक्षता का विकास और संवर्धन के लिए सहायता भी कर रही है। भाषा दक्षता के कारण कई सारे प्रमुख कौशलों का विकास संतुलित और समन्वित होने में मदद मिल रही है। अनेक भाषाओं में समन्वय प्रस्थापित करने हेतु एआय महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भाषा की आंतरिक जटिलता को कम करने तथा भाषा को वस्तुनिष्ठ बनाने में एआय भूमिका है साथ ही विभिन्न भाषाएं,पृष्ठभूमि वाले छात्रों को समान अवसर प्रदान करने में कार्य कर रहा है अर्थात आज के युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी साहित्य का शिक्षण अधिगम एक नवीन शिक्षण पद्धति है। जिसमें तकनीकी की सहायता से साहित्य को बेहतर ढंग से समझाया जाता है ।यह शिक्षक का स्थान नहीं लेती बल्कि शिक्षक और छात्र दोनों की सहायक बनती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1.बालेंदु शर्मा दधीच , हिंदी विमर्श की मुख्य धारा में कृत्रिम

बुद्धिमत्ता, साहित्य परिक्रमा, जुलाई - 2023, पृष्ठ-क्रमांक - 20

2.बालेंदु शर्मा दधीच , हिंदी विमर्श की मुख्य धारा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साहित्य परिक्रमा,जुलाई - 2023, पृष्ठ-क्रमांक - 21

3.रमेश शर्मा , कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साहित्यिक रचनात्मकता -, प्रकाशक- राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष - 2023

4.अंजली गुप्ता , डिजिटल युग में हिंदी साहित्य -,वाणी प्रकाशन, मुंबई ,प्रकाशन वर्ष - 2022

5. सुधाकर कल्लपा इंडी,हिंदी साहित्य सृजन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका- , प्रकाशन वर्ष- 2025, प्रकाशक अक्षरसूर्या जर्नल - 20254.गुप्ता प्रियंका, भाषा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव, शारदा पब्लिशर्स, 2021

5.कुमार सुनील सिंह, साहित्य में Al का योगदान, राष्ट्रीय साहित्य परिषद, 2019

6.समीर सिंह, मशीन लर्निंग और साहित्यिक रचनाएँ, राष्ट्रीय साहित्य प्रकाशन, 2020

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)